कपूरथला-पंजाब। पंजाब पॉवर एंड इर्रीगेशन मिनिस्टर गुरजीत सिंह राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।

चोमू-जयपुर(राज.)। विधायक रामलाल शर्मा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रेम बहन व ब्र.कु.पूनम।

जयपुर-बनीपार्क। रक्षाबंधन के अवसर पर राजस्थान पुलिस एकेडमी में डी.एस.पी. तथा सभी जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।

नारनौल-हरियाणा। विधायक ओमप्रकाश जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रत्ना।

मदनपुर-ओडिशा। सरपंच चित्तरंजन बग को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि।

भरतपुर-राज.। जेल सुपरीन्टेंडेंट राकेश मोहन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बबिता।

आपके कहने से नहीं, आप जो हैं, वैसे ही बच्चों के संस्कार

गतांक से आगे...

तीसरे प्रकार के संस्कार हैं - खानदानी संस्कार। मात-पिता द्वारा प्राप्त संस्कार। कोई बच्चा माँ जैसा है, कोई बच्चा पिता जैसा है और कोई बच्चा दादा जैसा भी हो जाता है। यानी ये खून के संस्कार हैं। एक बार एक छोटा बच्चा, दस-बारह साल का होगा। बहुत झूठ बोलता था। बात-बात में झूठ बोलता था। कई बार मैंने उसको देखा झूठ बोलते हुए। आखिर एक दिन मैंने उसको बुलाया और उसको पूछा कि तू झूठ क्यों बोलता है?

वो हँसने लगा। वो जानता था कि मैं झूठ बोलता हूँ। मैंने उससे पूछा कि अच्छा ये बताओ कि ये झूठ बोलने से तुम्हें क्या मिला? तो कहने लगा कि कुछ नहीं। तो फिर क्यों झूठ बोलना चाहिए? तो कहने लगा कि बस ऐसे ही बोल लेता हूँ। मैंने उस बच्चे को समझाना चाहा कि देखो तुम झूठ बोलकर व्यक्तित्व कैसा बना रहे हो? तुम्हारा भविष्य कैसे बनेगा? कई कहानियाँ सुनाई, कई उदाहरण सुनाए। वो बच्चा समझदार था, मेरी बातें समझ रहा था और इसलिए जब मैंने उसे आधा-पौना घंटा समझाया तो वह कहता है, ठीक है आगे से झूठ नहीं बोलूंगा। मैंने कहा कि प्रॉमिस करो कि तुम कभी झूठ नहीं बोलोगे। तो कहता है कि प्रॉमिस करता हूँ कभी झूठ नहीं बोलूंगा। जब हम दोनों बात कर रहे थे तो पास में खड़ा एक बुज़ूर्ग व्यक्ति उसे सुन रहे थे। बच्चा जैसे ही बोला कि मैं प्रॉमिस करता हूँ कि कभी नहीं झूठ बोलूंगा, तो उस बुज़ूर्ग व्यक्ति को हँसी आ गई। मैंने पूछा आप क्यों हँसे? तो कहने लगा कि दीदी ये जो प्रॉमिस इसने किया ना, यह भी झूठ है। मैंने कहा कि कैसे कह सकते हैं कि ये झूठ बोल रहा है? बोला कि इसका दोष नहीं है, उसका बाप भी ऐसा ही है। बिना मतलब उसको झूठ बोलना ही है। जब तक ये झूठ नहीं बोलते हैं ना तब तक इनकी रोटी हज़म नहीं होती है। उसके दादा को भी मैंने देखा था वो भी ऐसा ही था। ये खानदानी संस्कार हैं। आज ये बच्चे ने भले महसूस भी किया लेकिन वो खून थोड़े ही बदली हो गया। इसलिए पुन: ये झूठ बोलेगा। उस बात के लिए तो उसको स्वयं पर बहुत मेहनत करनी पड़ेगी, तब वो संस्कार को परिवर्तन कर सकता है। कहने का भावार्थ यह है कि ये तीसरे प्रकार के संस्कार हैं।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

चौथे प्रकार के संस्कार जो हम इस जन्म में नये बनाते हैं। वे संग के प्रभाव में आ करके, वातावरण के प्रभाव में आ करके बनते हैं। कई बार हम देखते हैं कि कई अच्छे घर के बच्चे होते हैं, परंतु कहीं बुरी संगत में लगते हैं, होस्टल में पढ़ने जाते हैं या बोर्डिंग होती है। वहाँ जब पढ़ने जाते हैं तब बुरी संगत में लग जाते हैं और ऐसे कर्म करने लगते हैं कि जिस कर्म के कारण उनके संस्कार ऐसे हो जाते हैं। माँ-बाप को जब पता चलता है और वे उस बच्चे को सावधान करने का प्रयत्न करते हैं कि बेटा ये कर्म ठीक नहीं है। तो वह माँ-बाप को छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है लेकिन वो संग को छोड़ना नहीं चाहता है। इतना परवश है, इतना पराधीन है उस संग के, उस वातावरण के। उस आधार पर उसके नये संस्कार बनते जाते हैं। इन्हीं संस्कारों के आधार पर उसका एक व्यक्तित्व बनता है। इंसान का व्यक्तित्व जो है वो एक बर्फ की शिला जैसा है। जैसे बर्फ की शिला ऊपर से सिर्फ दस प्रतिशत दिखाई देती है, नीचे 90 प्रतिशत भाग उसका दिखाई नहीं देता है। ठीक इसी प्रकार इंसान का जो व्यक्तित्व है, जो हमें दिखाई देता है वह सिर्फ 10 प्रतिशत है। हम किसी व्यक्ति को सिर्फ 10 प्रतिशत जानते हैं, बाकि 90 प्रतिशत उसके व्यक्तित्व को शायद वो खुद भी नहीं जानता। इतना वो सुषुप्त है अंदर से, जो वो खुद भी नहीं जान पाता है और उसके व्यक्तित्व को कंट्रोल करने वाले ये संस्कार जो हैं वह ड्राइविंग फोर्स बन जाते हैं। अंडर करेंट के रूप में यह उसके व्यक्तित्व को कंट्रोल करते रहते हैं। अब उस संस्कार को अगर खत्म करना हो और अपने व्यक्तित्व को परिवर्तन करना हो तो कैसे करें? उसके लिए जैसे कहा जाता है कि लोहे से लोहा कटता है। हीरा से हीरा कटता है। ठीक इसी प्रकार संस्कार से संस्कार को काटा जा सकता है। अर्थात् इन चारों प्रकार के संस्कार को काटने के लिए पाँचवे प्रकार के संस्कार को जागृत करना होता है। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

हर चीज़ वहीं मिल जाती है जहाँ वो खोयी हो, लेकिन विश्वास वहाँ कभी नहीं मिलता जहाँ एक बार खो जाता है।

ज़िन्दगी बेहतर तब होती है, जब आप खुश होते हैं। लेकिन ज़िन्दगी बेहतरीन तब होती है जब आपकी वजह से लोग खुश होते हैं।

किसी के कहने से यदि अच्छा या बुरा होने लगे तो ये संसार या तो स्वर्ग बन जाये, या पूरी तरह से नर्क। इसलिए ये ध्यान मत दो कि कौन क्या कहता है, बस वो करो जो अच्छा है और सच्चा है।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

TATA Sky 1065 | airtel digital TV 678 | FASTWAY | GTPL | DEN
videocon d2h 497 | RELIANCE Digital TV 640 | hathway | UCN | DigiCable | SITI

ABS FREE DTH
Free to Air
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 09750/10600
Tans Freq. - 12227
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

आवश्यक सूचना

एस.एल.एम. ग्लोवल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोवल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग के लिए दो बी.एस.सी. नर्सिंग ग्रेजुएट्स,टीचिंग एक्सपीरियंस के साथ तथा एक एम.एस.सी. बायोकैमेस्ट्री मेल/फीमेल की अतिशीघ्र आवश्यकता है। संपर्क करें :- शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड, राज.। मो.- 8432345230 ई.मेल- slmgnc.raj@gmail.com

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510, सदस्यता के लिए सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये ।
विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।